* ७८६ *

अनमोल प्रार्थनायें

प्रकाशक :

एस० एम० हुसैनन जाफ़री

पो-७७, मुडियाली रोड,

कलकत्ता-२४

प्रथम बार २०००] १९६८ मूल्य १)

भूमिका

मैं ईश्वर के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो कृपा-निधान है।

चूँकि आज के संसार में अरबी, फ़ार्सी और उर्दू भाषाओं की बहुत कुछ कमी पाई जा रही है, यहाँ तक कि मुसलमान बच्चे भी अधिकतर अपनी मातृभाषा 'उर्दू' नहीं जानते। इसके अतिरिक्त सब से मुख्य कारण यह भी है कि हिन्दू भाइयों के सम्मुख भी यह चीज़ रखने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है कि उनको भी ज्ञात हो कि हमारे इमाम 'अवतार' भी ईश्वर से कैसी-कैसी प्रार्थनायें करते थे। इसलिये आदरणीय सेठ हाजी अब्दुल्लाह भाई गाँगजी, कलकत्ता के सुपुत्र माननीय हसन अली गाँगजी ने यह शुभ कामना प्रकट की, कि अपने इस्लाम

के सब से अधिक नमाज़ी और प्रार्थना करने-वाले इमाम हज़रत जैनुल आवदीन की अरबी प्रार्थनाओं का अनुवाद हिन्दी भाषा में भी प्रकाशित किया जाये, जिससे हिन्दी-भाषी मुस्लिम बच्चे भी अपने धर्म की बातों को भली-भाँति धारण कर सकें और हिन्दू भाई भी हमारे धर्म के महत्त्व को समझ सकें। इसी आधार पर हज़रत इमाम जैनुल आवदीन अलैहिस सलाम की प्रार्थनाओं की प्रसिद्ध और पवित्र ग्रंथ 'सहीफै कामेला' (सहीफै सज्जादिया) से बारह अति आवश्यक प्रार्थनाओं के हिन्दी अनुवाद जनता के सम्मुख लाये जा रहे हैं, जिससे अरबी न जानने वाले लोग यह समझ कर इन प्रार्थनाओं का स्मरण करें कि क्या पढ़ रहे हैं और प्रार्थना करते समय यह जान सकें कि ईश्वर से क्या माँग रहे हैं।

इससे पूर्व जनाब सैय्यद वज़ीर हसन साहेब, बायज़ इमामे जुमा जमाअत, बसरावी मसजिद ६१, कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता-१ के स्वच्छ परिश्रम से जनाब जुर्म मुहम्मदाबादी इन्हीं बारह प्रार्थनाओं के उर्दू अनुवाद सेठ अब्दुल्लाह भाई गाँगजी की उज्ज्वल कामना से जनता के सम्मुख ला चुके हैं।

अब ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि उसकी असीम कृपा से हिन्दी अनुवाद जो मुझ जैसा अशिक्षित सेवक प्रस्तुत करने जा रहा है, इसमें मुझे माननीय हसन अली गाँगजी की शुभ कामनाओं की पूर्त्ति करने में भरपूर सफलता प्राप्त हो और यह अनुवाद जिन सज्जन के हाथ आये, वह पूर्णतः मन से अध्ययन करने का कष्ट करें और माननीय हसन अली गाँगजी की

कामनाओं के हित में उनकी और उनके कुटुम्ब की उन्नति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें।

मैं यहाँ इस सम्बन्ध में बड़े हर्ष के साथ जनाब मौलवी हकीम मिरज़ा मुहम्मद यूसुफ़ साहेब को उनके सहयोग के निमित्त धन्यवाद देता हूँ।

चूकि ईश्वर का नाम लेकर आरम्भ कर रहा हूँ, इसलिये आवश्यक समझता हूँ कि प्रार्थनाओं के पहले ईश्वर के पाक नाम गिना दूँ, फिर उसके नबी और रसूल हज़रत मुहम्मद साहेब और ईश्वर की ओर से बनाये हुये उनके सच्चे एवं सर्वप्रथम ख़लीफा और जांनशीन हमारे पहले इमाम हज़रत अली अलैहिस सलाम की नसीहतें प्रभु के फरमान सहित आपके सामने लाने के बाद हज़रत इमाम-

जैनुल आबदीन अलैहिस सलाम की संक्षिप्त जीवनी पर थोड़ा प्रकाश डालते हुये आगे बढ़ूँ।

आशा करता हूँ कि त्रुटियाँ क्षमा की जायेंगी और कमी को पूरा करने की ओर ध्यान दिलाया जायेगा।

खाकसार सेवक,

सै० मु० हसनैन जाफ़री,

अदीबे कामिल (अलीग)

१६. ५. १६६८ पी-७९, मुडियाली रोड,

कलकत्ता-२४

ईश्वर के नाम से आरम्भ करता हूँ, जो मेहरबान और रहीम है :—

"ईश्वर के पाक नाम"

१ या अल्लाहो = हे प्रभु

२ या रहमानो = हे संसार के कृपा-निधान

३ या रहीमो = हे प्रलय में कृपा करने वाले

४ या मलिको = हे सम्पूर्ण संसार एवं प्रलय की राजगद्दी के मालिक

५ या कुद्दूसो = हे ईश्वर

६ या सलामो = हे हर प्रकार की बुराइयों से मुक्त

७ या मोमिनो = हे अमन देने वाले

८ या मोहीमिनो = हे रक्षा करने वाले
९ या अज़ीज़ो = हे सब पर छाये हुये
१० या जब्बारो = हे बलवान
११ या मोतकब्बिरो = हे उच्चतर
१२ या ख़ालिक़ो = हे पैदा करने वाले
१३ या बारियो = हे उत्पन्न करने वाले
१४ या मोसव्विरो = हे मुखड़ों को बनाने वाले
१५ या ग़फ्फारो = हे अति क्षमा करने वाले
१६ या क़हारो = हे अपने विपक्षियों को दण्ड देने वाले
१७ या वहाबो = हे बहुत अधिक देने वाले
१८ या रज्जाको = हे रोजी देने वाले
१९ या फ़त्ताहो = हे हर कष्ट के दूर करने वाले

२० या अलीमो = हे सब कुछ जानने वाले

२१ या क़ाबिज़ो = हे रोज़ी के रोक देने वाले

२२ या बासितो = हे रोजी बढ़ाने वाले

२३ या ख़ाफ़िजो = हे नीचा दिखाने वाले

२४ या राफ़ेओ = हे ऊँचा करने वाले

२५ या मोइज्जो = हे इज्जत देने वाले

२६ या मोजिल्लो = हे जिल्लत देने वाले

२७ या समीओ = हे सब कुछ सुनने वाले

२८ या बसीरो = हे सब कुछ देखने वाले

२९ या हकमो = हे अटल और वास्तविक न्याय करने वाले

३० या अदूलो = हे हर चीज को उनका ठीक स्थान देने वाले

३१ या लतीफो = हे तह तक जानने वाले

३२ या ख़बीरो = हे सब कुछ जानने वाले

३३ या हलीमो = हे अपने आपको संभाले रहने वाले

३४ या अजीमो = हे सबसे उच्चतर

३५ या गफ़ूरो = हे बख़्शने वाले, क्षमा करने वाले

३६ या शकूरो = हे कदर "इज्जत" करने वाले

३७ या अलीओ = हे सब से ऊँचे

३८ या कबीरो = हे बड़ाइयों वाले

३९ या हफीजो = हे रक्षा करने बाले

४० या मोकीतो = हे सांसारिक रोजियाँ पैदा करने वाले

४१ या हसीबो = हे वह ईश्वर जो हमारी आवश्यकताओं के लिये काफी है

४२ या जलीलो = हे बड़ाई वाले

४३ या करीमो = हे कृपा करने वाले

४४ या रकीबो = हे हर हाल के जानने वाले

४५ या मोजीबो = हे स्वीकार करने वाले

४६ या वासेओ = हे अति ज्ञान और कृपा वाले

४७ या हकीमो = हे समझ वाले

४८ या वदूदो = हे बहुत चाहने वाले

४९ या मजीदो = हे सब से बड़े

५० या बायसो = हे एकत्रित करने वाले

५१ या शहीदो = हे साक्षी

५२ या हक्क़ो = हे वास्तविक मौजूद रहने वाले

५३ या वकीलो = हे काम बनाने वाले

५४ या क़वीयों = हे बल वाले

५५ या मतीनो = हे बलवान

५६ या वलीओ = हे मालिक "सर परस्त"

५७ या हमीदो = हे गुणों वाले

५८ या मोह सीयो = हे घेरने वाले

५९ या मुवदीयो = हे नवीन चीजों के पैदा करने वाले

६० या मोईदो = हे लौटाने वाले

६१ या मोहीयो = हे ज़िन्दा करने वाले

६२ या मोमीतो = हे मार डालने वाले

६३ या हइयो = हे सदा ज़िन्दा रहने वाले

६४ या क़इयूमो = हे स्वयं क़ायम रहने वाले और दूसरों को क़ायम रखने वाले

६५ या वाजिदो = हे अपने हर गुण के हर समय रखने वाले

६६ या वाहिदो = हे एक

६७ या माजिदो = हे बड़ाई वाले

६८ या अहदो = हे अकेले "बिना साथी और सहयोगी"

६९ या समदो = हे किसी चीज़ की आवश्यकता न रखने वाले

७० या क़ादिरो = हे हर चीज़ पर क़ब्ज़ा और हुक्म रखने वाले

७१ या मुक़तदिरो = हे बड़ी इज्ज़त वाले

७२ या मोक़देमो = हे आगे बढ़ाने वाले

७३ या मोअख़्खेरो = हे पीछे हटाने वाले

७४ या अव्वलो = हे सबसे पहले

७५ या आख़िरो = हे सबसे अन्तिम

७६ या ज़ाहिरो = हे सबके सम्मुख रहने वाले

७७ या बातिनो = हे सबसे छिपे रहने वाले

७८ या वालियो = हे सबके हाकिम और मालिक

७९ या मोतआली = हे संसार के समस्त गुणों से उच्चतर गुणों वाले

८० या बर्रो = हे अच्छा व्यवहार करने वाले

८१ या तव्वाबो = हे अपने बुरे कामों पर पछताकर आगे ऐसा न करने का प्रण करके माफ़ी मांगने वाले को क्षमा करने वाले

८२ या मुनइमो = हे सामग्रियों के देने वाले

८३ या मुनतक़िमो = हे बदला लेने वाले

८४ या अफ़्वो = हे क्षमा करने वाले

८५ या मालिकुलमुल्क = हे समस्त संसार एवं प्रलय के मालिक

८६ या ज़ल-जलाल बल-एकराम = हे बड़ाई एवं कृपा वाले

८७ या रऊफ़ो = हे नर्मी से पेश आने वाले

८८ या रब्बो = हे पालने वाले

८९ या मुक़्सितो = हे न्याय करने वाले

९० या जामेओ = हे एकत्रित करने वाले

९१ या ग़नीयो = हे मालदार और हर चीज़ से बेपरवाह

९२ या मुग़्नियो = हे आसूदा करने वाले

९३ या मोअतीयो = हे देने वाले

९४ या मानेयो = हे रोक देने वाले

९५ या जारों = हे हानि पहुँचाने की ताकत रखने वाले

९६ या नफेओ = हे लाभ देने वाले

९७ या नूरो = हे स्वयं सामने रहने वाले और दूसरों को सामने रखने वाले

९८ या हादिओ = हे रास्ता बताने वाले

९९ या बदीओ = हे बनाने वाले

१०० या बाकियो = हे सदा रहने वाले

१०१ या वारिसो = हे सब के मालिक और वारिस

१०२ या रशीदो = हे समझ और रास्ता बताने वाले

१०३ या सबूरो = हे सन्तोष एवं आवश्यक विलम्ब से कार्य करने वाले

१०४ या सत्तारो = हे सब के भेदों को छिपाने वाले

हे प्रभु अपने रसूल मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा एवं नेकी और सलामती की दृष्टि रख।

ईश्वर के नाम से आरम्भ करता हूँ

"ईश्वर का फ़रमान"

ईश्वर ने अपने आकाश ग्रन्थ में कहा है कि :

(१) यदि तुम मेरा स्मरण करते रहोगे तो मैं भी तुम्हारी याद नेकी के साथ करूँगा। तुम मेरी दी हुई वस्तुओं के प्रति मुझे धन्यवाद देते रहो और मेरी नाशुकरी मत करो।

(२) ए रसूल (मुहम्मद साहेब) जनता से कह दो कि यदि तुम ईश्वर से प्रार्थना नहीं करते तो ईश्वर को भी तुम्हारी कोई परवाह नहीं है।

ईश्वर के नाम से आरम्भ करता हूँ

ईश्वर के अन्तिम रसूल, मुहम्मद साहेब ने बताया है कि :—

जो फ़ीरोजे की अँगूठी पहनेगा तो हाथ उसका ख़ाली न रहेगा, रोज़ी उसकी बढ़ेगी, आँख और दिल को मज़बूती मिलती है, आवश्यकता पूरी होती है। ईश्वर कहता है कि फ़ीरोजे की अँगूठी पहनने वाले के हाथ जब प्रार्थना के लिये उठते हैं तो उसे निराश करने से मुझे शर्म आती है और मैं उसकी प्रार्थना को स्वीकार करता हूँ।

ईश्वर के नाम से आरम्भ करता हूँ

ईश्वर की ओर से बनाये हुए मुहम्मद साहेब के नायब जानशीन, हज़रत अली अलैहिस सलाम ने प्रार्थना के सम्बन्ध में बताया है कि :—

"कष्ट आने से पूर्व ईश्वर से प्रार्थना करो।"

हज़रत इमाम जैनुल आबदीन अलैहिस सलाम की संक्षिप्त

जीवनी

ईश्वर के नाम से आरम्भ करता हूँ

हज़रत इमाम जैनुल आबदीन अलैहिस सलाम, अल्लाह के रसूल-मुहम्मद साहेब के छोटे नवासे हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस-सलाम के पुत्र थे।

अल्लाह की ओर से मुहम्मद साहेब के प्रिय धर्म 'इसलाम' की लाज और बुनियाद बाक़ी

रखने के लिये हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस सलाम ने दुश्मनों के फ़साद से मदीना छोड़ा और नाना के सच्चे दिल से मानने वालों की मुक्ति के लिये उस समय के ज़बर-दस्ती ताक़त वाले इसलाम के दुश्मन दुनियावी बादशाह यज़ीद की शराबख़ारी और जुल्म को नहीं माना और उसके कहने पर चलने को न मान कर दूसरी मोहर्रम सन् ६१ हिजरी को करबला के मैदान में आये जहाँ इसलाम के दुश्मनों ने उनको उनकी सन्तान और उनके साथियों सहित तीन दिन का भूखा-प्यासा एक दोपहर में दसवीं मोहर्रम सन् ६१ हिजरी को बड़ी बेरहमी से मार डाला, जिसमें कुटुम्ब वाले और अन्य साथी बूढ़े और जवान सभी थे, यहाँ तक कि एक ६ मास के बच्चे को भी पानी मांगने पर तीर लगा कर मार डाला।

चूँकि ईश्वर चाहता था कि हज़रत इमाम हुसैन के बाद भी इमामत क़ायम रहे, इसलिये दुश्मनों के जुल्म से हज़रत इमाम जैनुल आबदीन जिन्दा बच गये। हज़रत इमाम हुसैन के क़त्ल के बाद दुश्मनों ने आपको बहुत दुःख दिया। बच्चों और नारियों सहित बहुत दिनों कैद में रखा। कैद करने के दूसरे दिन यज़ीद ने दरबार में फिर बुलाया और वार्तालाप के सम्बन्ध में आपके क़त्ल का आदेश दिया, परन्तु जल्लाद के हाथ से तलवार काँप कर गिर पड़ी। बाप के मरने के बाद इस्लाम की सहायता उसी प्रकार करते रहे।

आपने ईश्वर की इतनी प्रार्थना की, कि ईश्वर ने जैनुल आबदीन की पदवी दी। नाम आपका वास्तव में अली है।

आपका सारा जीवन कष्ट ही में व्यतीत

रखने के लिये हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस सलाम ने दुश्मनों के फ़साद से मदीना छोड़ा और नाना के सच्चे दिल से मानने वालों की मुक्ति के लिये उस समय के ज़बर-दस्ती ताक़त वाले इसलाम के दुश्मन दुनियावी बादशाह यज़ीद की शराबख़ारी और जुल्म को नहीं माना और उसके कहने पर चलने को न मान कर दूसरी मोहर्रम सन् ६१ हिजरी को करबला के मैदान में आये जहाँ इसलाम के दुश्मनों ने उनको उनकी सन्तान और उनके साथियों सहित तीन दिन का भूखा-प्यासा एक दोपहर में दसवीं मोहर्रम सन् ६१ हिजरी को बड़ी बेरहमी से मार डाला, जिसमें कुटुम्ब वाले और अन्य साथी बूढ़े और जवान सभी थे, यहाँ तक कि एक ६ मास के बच्चे को भी पानी मांगने पर तीर लगा कर मार डाला।

चूँकि ईश्वर चाहता था कि हज़रत इमाम हुसैन के बाद भी इमामत क़ायम रहे, इसलिये दुश्मनों के जुल्म से हज़रत इमाम जैनुल आबदीन जिन्दा बच गये। हज़रत इमाम हुसैन के क़त्ल के बाद दुश्मनों ने आपको बहुत दुःख दिया। बच्चों और नारियों सहित बहुत दिनों कैद में रखा। कैद करने के दूसरे दिन यज़ीद ने दरबार में फिर बुलाया और वार्तालाप के सम्बन्ध में आपके क़त्ल का आदेश दिया, परन्तु जल्लाद के हाथ से तलवार काँप कर गिर पड़ी। बाप के मरने के बाद इस्लाम की सहायता उसी प्रकार करते रहे।

आपने ईश्वर की इतनी प्रार्थना की, कि ईश्वर ने जैनुल आबदीन की पदवी दी। नाम आपका वास्तव में अली है।

आपका सारा जीवन कष्ट ही में व्यतीत

हुआ। करवला की घटना के बाद आपको किसीने हँसते नहीं देखा।

आपकी पैदाइश सन् ३८ हिजरी में शबे-बरात मास की ५ तारीख को मदीने में हुई। सत्तावन वर्ष की आयु में इसलाम के शत्रु "वलीद" के जहर दिलवा देने से सन् ६५ हिजरी में मुहर्रम की २५ तारीख को अन्त-काल हुआ।

ईश्वर की प्रार्थना करते समय इतना डर कर लग्न होते थे कि चेहरा पीला हो जाता था। दिन रात मिला कर एक हज़ार रेकत नमाज़ पड़ते थे। नमाज़ पढ़ते समय थर थर काँपते थे। आधी रात ही से नमाज़ का सिलसिला आरम्भ करते थे और सुबह की नमाज़ तक नमाज़ पढ़ा करते थे।

स्वयं कष्ट उठा कर गरीबों की सहायता

करते थे। रातों को छिप कर कन्धों पर रोटियाँ लाद कर मोहताजों को पहुँचाया करते थे।

करबला की सन् ६१ हिजरी की खूनी घटना के बाद 'शाम' के कैद का कष्ट उठा कर जब छूट कर 'मदीना' आये तो सन् ६५ हिजरी 'अपनी वफात'तक पूरे ३४ वर्ष घर से बाहर नहीं गये। संसार के सारे झगड़ों से अपने को मुक्त कर लिया। सब से मिलना जुलना छोड़ दिया। केवल उन लोगों से मिलते थे जो कभी धार्मिक गुत्थियों के सुलझवाने के प्रति दर्शनार्थ आते थे। कुछ पाक और ज्ञानी लोग "अबू हमज़ा और इमाम ज़ोहरी" इत्यादि जैसे कभी-कभी आपकी सेवा में उपस्थित हुआ करते थे। आपने धर्म की बातों को जनता को बताने के लिये

अपनी ओर से हज़रत मुहम्मद हनफ़िया को नियुक्त कर दिया था। स्वयं हर समय ईश्वर की प्रार्थना में लगे रहते थे। जो समय प्रार्थना से बचता उसमें बाप को याद करके रोया करते थे। खाने पर रोते, पानी पर रोते।

इसलाम और रसूल की सन्तान के शत्रु अब्दुल मलिक अपने समय के बादशाह ने थोड़े दिनों के बाद इस दुश्मनी और ग़लत-फ़हमी से कि जनता कहीं हज़रत के साथ होकर हमारी बेईमानी और ग़लत तरीकों से हम को गद्दी से हटा न दे, हज़रत को दोबारा कैद कर लिया। इमाम ज़ोहरी कैदखाने में आपके दर्शनार्थ गये और हतकड़ी बेड़ी में देख कर रोने लगे। आपने कहा कि तुम मुझ को मजबूर न समझो। शीघ्र ही हथकड़ी बेड़ी इतना कहने पर अपने आप अलग हो गई

और आप सीधे बादशाह के पास पहुँचे और पूछा कि तुझे मुझ से कौन सा खतरा है। अब्दुल मलिक ने अपना संदेह प्रकट करते हुये कहा कि आप मेरे पास रहिये। हज़रत ने कहा कि मुझे मदीना छोड़ना पसन्द नहीं है और तुरन्त मदीना चले गये।

आपकी बड़ाई और इज़्ज़त में आपके हज की एक घटना इसकी साक्षी है कि जनता में आपकी क्या इज़्ज़त थी। एक बार बादशाह हश्शाम हज के लिये गया (हालाँकि उसे हज़ से कोई लाभ नहीं, क्योंकि यह दिखावे का कार्य था, दिल में इस्लाम से दुश्मनी थी)। भीड़ से रास्ता न मिलने के कारण बाहर कुर्सी लगाकर बादशाहत के रोब में बैठ गया। भीड़ कम होने का इन्तज़ार कर रहा था कि रास्ता मिलने पर हज की एक मुख्य शर्त (हरमकावे

के अन्दर "हजरे असवद"—असवद पत्थर को चूमना) पूरी करने जाय, क्योंकि वहाँ फ़क़ीर और बादशाह में कोई अन्तर नहीं रहता। इतने में हज़रत का आगमन हुआ। सारे लोग इज्ज़त से हट-हटकर रास्ता देने लगे और झुक-झुक कर सलाम करने लगे कि दीन व दुनियाँ का शहनशाह आ रहा है। बादशाह ने यह देख कर अपनी झेंप मिटाने के लिये पूछा कि यह कौन है कि सारी जनता इतनी इज्ज़त कर रही है। और लोग तो डर से चुप रहे, परन्तु फ़रज़दक़ कवि बोल उठा कि :—

तू नहीं जानता, न जान, इनको सारा संसार जानता है। यह वह हैं कि :—

इनके पैरों के निशान को मक्के की भूमि पहचानती है। इनको काबा पहचानता है; यह ईश्वर के उच्चतर भक्त के पुत्र हैं। यह

स्वच्छ और मशहूर सरदार हैं। यह उस इज्जत के मनुष्य हैं कि सारे अरब और अजम में कोई मुसलमान ऐसी इज्जतवाला नहीं है।

यह वह हैं कि हरम में असवद पत्थर को चूमते समय कोई संदेह नहीं कि असवद पत्थर स्वयं इन के ही हाथ चूमे।

इनके माथे से संसार को अच्छे रास्ते पर चलने के लिये ऐसी चमक मिलती है कि जैसे सूर्य की रोशनी से अंधेरा ग़ायब हो जाता है। यदि तू इनको नहीं जानता तो सुन :—

यह हज़रत फ़ातमा (मुहम्मद साहेब की बेटी) के बेटे हैं। इन के नाना हज़रत मुहम्मद साहेब हैं।

तेरा यह कहना कि यह कौन हैं, इनको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।

सारे अरब और अजम यहां हज करने

वाले समझते हैं कि तू ने किसके पहचानने से इनकार किया है।

इनके हाथों से सारे संसार की सहायता होती है। इनसे सबको लाभ होता है। यह अपनी न होती में भी जनता की सहायता करते हैं। यह ऐसे देता दान हैं कि "नहीं" का शब्द कभी ज़बान पर लाते ही नहीं। बादशाह ने क्रोधित होकर फ़रज़दक़ को कैद कर दिया। और पूछा कि तूने कभी मेरी प्रशंसा ऐसी क्यों नहीं की? जिसके उत्तर में उसने कहा कि तू भी पहले अपने को उन जैसा बना फिर ऐसी कामना कर।

हज़रत ने कैद का हाल मालूम करके फ़रज़दक़ को एक आदमी के ज़रिये से बारह हज़ार दीनार जेलख़ाने में भेजे और यह कहलवाया कि यदि मेरे पास इससे भी अधिक इस

समय होता तो तुझे और देता। फ़रज़दक़ ने उस धन-राशि को हज़रत को धन्यवाद देते हुये वापस किया और यह कहलवाया कि मैंने इन रुपयों के लिये और दुनियाँ की लालच के लिये आपकी प्रशंसा नहीं की है, बल्कि यह आपकी वास्तविक और खानदानी प्रशंसा है। हज़रत ने फिर उस रक़म को लौटाया और यह कहलवाया कि हम "आले रसूल" (ईश्वर के प्रिय भक्त, रसूल और नबी मुहम्मद साहेब की मुख्य और स्वच्छ सन्तान के लोग) किसी को कुछ देकर वापस नहीं लिया करते। फ़रज़दक़ ने अब मजबूर होकर ले लिया।

ईश्वर की प्रार्थना "नमाज़ और इबादत" के सम्बन्ध में एक वास्तविक और सोनहरा वक्तव्य हज़रत का यह है कि :—

ईश्वर की भक्ति, प्रार्थना एवं इबादत के संसार में तीन रूप हैं :—

(१) डर से :—यह इबादत और प्रार्थना नौकरों की है।

(२) अपने स्वार्थ के लिये :—ऐसी प्रार्थना और इबादत रोज़गारी गण "ताजिरों" जैसी है।

(३) शुक्र और ईश्वर की दी हुई वस्तुओं की प्रशंसा और सराहना करते हुये उनको अपने लिये बहुत कुछ समझते हुये और उन पर भरपूर सन्तुष्टता प्रकट करते हुए ईश्वर की इबादत और प्रार्थना करना :—

यही वास्तविक इबादत, प्रार्थना और भक्ति है।

ईश्वर के नाम से आरम्भ करता हूँ

जो

बड़ा शीलवान एवं कृपानिधान है

हज़रत इमाम जैनुल आबदीन

अलैहिस सलाम

की पाक प्रार्थनाओं और इबादत की

स्वच्छ और पाक ग्रन्थ

"सहीफ़ै कामेला"

से

चुनी हुई अति आवश्यक

१२ प्रार्थनायें

(१)

ईश्वर
की बड़ाई, और उसकी प्रशंसा के सहित
प्रार्थना

ईश्वर के नाम से आरम्भ करता हूँ
जो बड़ा शीलवान एवं
कृपानिधान है

ईश्वर के महत्वपूर्ण गुण :

समस्त प्रशंसायें उस ईश्वर के लिये हैं जो सबसे पूर्वज है। उससे पूर्व कोई नहीं हुआ और वही सबके पश्चात् भी रहेगा। उसको देखने में संसार असमर्थ है। उसकी प्रशंसा करने से प्रशंसा करने वालों के हार्दिक दृष्टि-कोण का पता चलता है।

सांसारिक विधियों में ईश्वर के कार्यक्रम की उज्ज्वलता

ईश्वर ने अपनी असीम कृपा से संसार में जो कुछ भी जैसा चाहा बनाया और मनुष्य को जिस प्रकार चाहा पैदा किया, अपने बनाये हुए अच्छे रास्ते पर चलाया और अपने से प्रेम करना सिखाया। मनुष्य स्वयं ईश्वर की बनाई हुई सीमा से आगे पीछे नहीं हो सकता। जिसको जितनी रोज़ी ईश्वर ने दी है, उससे अधिक या कम करना मनुष्य के हाथ में नहीं है। ईश्वर ने जिसके लिये जितनी अवस्था जीवित रहने की निर्धारित कर दी है, उसमें कोई कुछ घटा बढ़ा नहीं सकता, आयु पूरी हो जाने पर इस संसार से चल ही देना होगा। उसके बाद प्रलय पर अच्छे काम करने वालों को पुरस्कार मिलेगा

और बुरा काम करने वालों को दण्ड। ईश्वर का निर्णय सच्चा और ठीक है। उससे कोई कुछ पूछने वाला नहीं है और वह सबसे सब कुछ पूछेगा।

ईश्वर की प्रशंसा और उसकी दी हुई वस्तुओंपर धन्यवाद देने की शक्ति मनुष्य को ईश्वर ने ही प्रदान की है :

समस्त प्रशंसायें उसी ईश्वर के लिये हैं जिसने अपने को अपनी निशानियाँ दे देकर और दिखला-दिखला कर पहचनवाया और हमें अपना शुक्रिया अदा करना सिखाया। हम पर शिक्षा के द्वारा हमें हर प्रकार से सिखाया कि ईश्वर बस एक ही है, उसकी एकताई में कभी शक न करना और उसकी ईश्वरी महिमा में कदापि किसी को सम्मिलित

न समझना। हमें ऐसी विधियाँ प्रदान कीं कि हम अपने कार्यों में कोई गलती न कर सकें।

हम ईश्वर की ऐसी प्रशंसा करते हैं कि हमारा नाम उन लोगों के साथ जीवित रहे जिन्होंने उसकी वास्तविक प्रशंसा की है।

ईश्वर की प्रशंसा करते हुये उसके द्वाराअपनी बढ़ती के प्रति प्रार्थना :

हम ईश्वर की प्रशंसा करते हुये प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे लिये प्रलय के रास्ते को आसान कर दे और उस दिन समस्त लोगों के सम्मुख हमें सबसे बढ़ चढ़ कर बड़ाई और ऊँचाई प्रदान करे।

हे प्रभु हम तेरी प्रशंसा के साथ प्रार्थना करते हैं कि प्रलय के मैदान में जब कोई किसी

को पहचान न सकेगा और एक दूसरे को फायदा न पहुँचा सकेगा, तू मेरी आँखों को तेज करना और मेरे मुखड़े को उज्जवल करना जब कि सबके चेहरे बुराइयों के कारण काले पड़ जायेंगे।

हे प्रभु हम तेरी प्रशंसा करते हुये प्रार्थना करते हैं कि तू मुझे नर्क से बचाना और वैकुण्ठ में स्थान देना।

हे ईश्वर हम तेरी प्रशंसा के साथ-साथ प्रार्थना करते हैं कि तू मुझे ऐसे रास्ते पर लगा कि प्रलय के मैदान में यम-दूत हमें रोक न सकें और हम सीधे स्वर्ग में अपने शुभ कार्यों के कारण जाकर पैगमबरों से मिलें और ऐसे अच्छे घर में रहें जहाँ से फिर हमें हटना न पड़े।

ईश्वर की प्रशंसा इस बात की कि उसने हमें (मनुष्य को) संसार में अपनी बनाई और पैदा की हुई चीजों में सबसे उच्च बनाया।

समस्त प्रशंसायें उसी ईश्वर के लिये हैं, जिसने हमारे लिये संसार में अच्छी-अच्छी शकलें बनाइं और हमको रोज़ी पहुँचायी। इसके अतिरिक्त प्रशासन की शक्ति देकर समस्त जीवधारियों से उच्च बनाया। इस उच्च होने के नाते संसार की सारी जानदार मख़लूक़ हमारे ही आदेश पर चलने लगी।

उस ईश्वर की प्रशंसा है जिसने आवश्यकता पर हमको केवल अपने ही द्वार पर जाने को कहा और दूसरों से मांगने को मना किया। इन बातों के कारण हम उसकी

प्रशंसा वास्तव में जितनी करनी चाहिये उतनी नहीं कर सकते।

हम उस ईश्वर की प्रशंसा करते हैं जिसने हमें इस संसार में हर प्रकार के कार्य करने की क्षमता दी। हम उसके एहसान सेकभी उत्तीर्ण नहीं हो सकते।

हम उस ईश्वर की प्रशंसा करते हैं जिसने हमें हर प्रकार से आसूदा किया है। अपने आदेश के विपरीत कार्य करने से दण्ड देने में बिलम्ब करता है कि हो सकता है कि हम पुनः अपने बुरे कार्यों पर पछता कर आगे ऐसा न करने का प्रण करके क्षमा मांगें और ठीक रास्ते पर आ जायें।

अपने किये हुये बुरे कार्यों पर पछता कर क्षमा माँगने का रास्ता बताने के प्रति ईश्वर की प्रशंसा

समस्त प्रशंसायें उसी सच्चे ईश्वर के लिये हैं जिसने हमें बुरा कार्य करने के बाद भी क्षमा मांग कर छुटकारा पाने का रास्ता बताया। अब हम में से जो भी बुरा कार्य करने के पश्चात् पछता कर आगे पुनः ऐसा न करने का प्रण करता है और क्षमा चाहता है उसे अवश्य ईश्वर क्षमा दे कर प्रसन्न कर देता हैं और जो ऐसी क्षमा नहीं मांगता वही दुखी होता है।

ईश्वर की उच्चतर प्रशंसा

समस्त प्रशंसायें ईश्वर ही के लिये हैं जैसी कि उस की प्रशंसा समस्त "फ़रिशते—" यमदूत और उसके जन्म दिये हुये अच्छे-अच्छे ऋषि, मुनि और भक्त करते और ऐसी प्रशंसा करते हैं जो सारी प्रशंसाओं से बढ़ चढ़ कर हैं जैसे कि हमारा ईश्वर सबसे बढ़

चढ़ कर है। ऐसी प्रशंसा कि जसी हमरे पूर्वजों ने की और हम सब कर रहे हैं। और भविष्य में भी करते रहेंगे और जिस प्रशंसा की कोई सीमा नहीं है। ऐसी प्रशंसा जो उसके हर्ष का कारण बने और जिससे वह हमें हमारे समस्त बुरे कार्यों के लिये क्षमा कर दे ऐसी प्रशंसा और प्रार्थना कि जिससे हमें स्वर्ग का रास्ता प्राप्त हो जाये। ऐसी प्रशंसा कि जो हमें उसके क्रोध से बचा ले। ऐसी प्रशंसा जो हमें उसके सारे आदेशों के पालन करने में सहायता दे। ऐसी प्रशंसा और आर्थना जो हमें उसके स्वच्छ और पाक सेवकों में गिनवाने का कारण बन सके। और उसके शत्रुओं के हाथों मार डाले जाने वालों में गिने जायें। निसन्देह वह मालिक और ईश्वर हमारा प्रशंसा जनक है।

ईश्वर

की प्रशंसा के

पश्चात उसके

रसूल और नबी

हज़रत

मुहम्मद साहेब

और उनकी

पाक सन्तान

के लिये ईश्वर की कृपा की चेष्टा के

साथ-साथ अपने लिये प्रार्थना

हज़रत मुहम्मद साहेब के रसूल के पद पर आने के बाद के कार्यों की बड़ाई और उसके लिये उन पर ईश्वर से कृपा की चेष्टा के साथ-साथ अपने लिये प्रार्थना

समस्त प्रशंसायें उसी ईश्वर के लिये हैं जिसने हज़रत मुहम्मद साहेब के द्वारा हम पर बड़ा एहसान किया है। ईश्वर हर प्रकार के कार्यों पर पूरा क़ाबू रखता है। उसने तमाम चीजों पर अपनी मोहर लगा दी है अर्थात् हर चीज़ के बनाने और पैदा करने में ऐसी निशानी दिखा दी जिससे कोई इनकार नहीं कर सकता और हमें उसका साक्षी बना दिया।

हे प्रभु तू मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर अपनी असीम कृपा रख

जो तेरे आदेशों के ख़ज़ानेदार थे और तेरे समस्त पैदा किये हुये लोगों में से चुने एवं पसन्द किये हुये थे और तेरी दृष्टिकोण में सब से अच्छे थे, कृपा एवं शीलता के मालिक थे, सबको अच्छे कार्यों और रास्तों की ओर ले जाने वाले थे, शीलता और प्रेम की कुञ्जी थे, अपने आप को तेरे आदेशों के पालन के लिये नियुक्त कर लिया था, तेरे आदेशों के पालन करने और लोगों से पालन कराने में हर प्रकार के कष्ट सहने पर तैय्यार रहते थे और बहुधा अवसरों पर इस सम्बन्ध में घोर आपत्तियों एवं कष्टों का सहन भी किया, अपने सम्पूर्ण कुटुम्ब को तेरी ओर बुलाया, तेरी ही खुशी के लिये अपने कुटुम्ब से लड़े और तेरी ही ख़शी के लिये अपने तमाम तेरे न मानने वाले रिश्तेदारों को छोड़ दिया।

जो लोग उनसे बहुत दूर थे और कोई रिश्तेदार भी नहीं थे परन्तु तेरे आदेशों का भलीभाँति पालन करते थे उन्हें अपना बना लिया और तेरी खुशी के लिये अपने समीप के लोगों से दुश्मनी कर ली। तेरा आदेश लोगों तक पहुँचाने में अनेकों प्रकार के कष्ट उठाये। तेरी खुशी और तेरे आदेशों के पालन करने के लिये अपनी जन्मभूमि तक छोड़नी पड़ी। बड़े बड़े दुःख उठा कर तेरे दीन और मज़हब "धर्म" को फलाया और ऐसी स्थिति में फैलाया कि जब कोई नहीं चाहता था।

हज़रत मुहम्मद साहेब के प्रति उच्च स्थान पर पहुँचने और अपने मानने वालों की मुक्ति करानेके योग्य होने की प्रार्थना

हे प्रभु जिन्होंने भी तेरी प्रसन्नता के हित में बहुत कुछ कार्य किये और कष्ट उठाये उनको

तू अपनी कृपा से उन कष्टों के सहने के उपलक्ष में स्वर्ग की ऊँची से ऊँची श्रेणी में स्थान प्रदान कर और ऐसा ऊँचा कर कि कोई अन्य मनुष्य इनके अपेक्षा सुन्दर कार्य न करने वाला किसी प्रकार भी इनकी तुलना न कर सके और उनके किसी भी पद में कोई दूसरा उनके समान न हो सके। कोई फ़रिश्ता-"यम-दूत" या कोई अन्य नवी और रसूल तेरी आँखों में उनके समान न ठहर सके।

उनकी पवित्र सन्तान और उनके स्वच्छ प्रेमियों की मुक्ति के सम्बन्ध में अपने किये हुये प्रण को पूरा कर दे क्योंकि तू वादे का पूरा करने वाला और अपने क़ौल का सच्चा है और अपनी प्रसन्नता के प्रति अच्छे कार्यों के करने वालों को उनकी की हुई नेकी का दुगुना बदला नेकी से देता है।

निसन्देह तू असीम कृपा करने वाला और रहम करने वाला है।

(३)

ईश्वर की महिमा एवं उसके महत्व के प्रदर्शन

ईश्वर की महिमा और उसकी सुन्दरता

उस ईश्वर के लिये सारी प्रशंसायें हैं, जो मनुष्य के हृदय में बड़ाई के साथ प्रकाशित है। सब से उच्च, सब से महान और सब से जीतने वाला होते हुये भी आँखों से छिपा है। अपनी पूरी ताक़त के साथ संसार की हर वस्तु

पर अपना भरपूर क़ाबू रखता है, परन्तु न तो हमारी आँखें उसे देख ही सकती हैं और न हमारी हार्दिक भावनायें उसकी महत्त्वता को परख सकती हैं। वह अपनी बड़ाई से संसार की हर चीज़ पर अपना क़ाबू रखता है। सुन्दरता और अच्छाइयों में सब से उच्च है। हमें हमारे अच्छे कार्यों के बदले में बड़ाई और पुरस्कार देने में प्रसन्न होता है और अपनी उज्ज्वलता में मुख्य है।

ईश्वर के गुणों का महत्व

ईश्वर ऐसा पैदा करने वाला है कि जिस के समान और कोई नहीं है।

ऐसा अकेला है कि कोई दूसरा उसकी ज़ात और उसके कार्यों में किसी प्रकार भी साझी नहीं है।

ऐसा एक है कि उसका शत्रु कोई नहीं है।

ऐसा महान है कि उसके बराबर कोई नहीं है।

ऐसा ईश्वर है कि उसका साझी कोई अन्य ईश्वर नहीं है।

ऐसा पैदा करने वाला है कि इस पैदा करने में कोई और उसका सहयोगी नहीं है।

ऐसा रोज़ी देने वाला है कि इस रोज़ी देने में कोई दूसरा उसका साथी नहीं है।

सब से पूर्वज है और सदा रहने वाला है। उसका कभी अन्त नहीं है। उसको कोई दुःख नहीं है। हमें हर प्रकार से सन्तुष्ट करने वाला है। बिना किसी की सहायता के हमें पालने वाला है और बिना किसी कष्ट के हमें पैदा करने वाला है। सदा से है, सदा रहेगा। कहीं नहीं है और हर स्थान पर है। हर प्रकार का क़ाबू रखने वाला है और संसार उसी के आदेश पर निर्भर है।

ईश्वर के सम्मुख मनुष्य की गिड़गिड़ाहट का प्रदर्शन :—

हे मेरे पालनहार! तेरा बे-बस और मजबूर दास तेरे ही बस में है, तुझ से माँगने वाला तेरे ही बस में है, तेरा मोहताज तेरे सम्मुख है।

हे मेरे मालिक, डरने वाले तुझ ही से डरते हैं, तुझ ही से प्रार्थना करते हैं और क्षमा कर दिये जाने की आशा रखते हैं।

हे पालने वाले और सच्चे ईश्वर, मेरे रोने-चिल्लाने पर तरस खा कर गुनाहों को क्षमा कर दे। जो अपने बुरे किये हुये कार्यों के निमित्त पछता कर क्षमा चाहते हैं और पुनः ऐसा न करने का प्रण करते हैं, उनको क्षमा कर दे और उनके लिये नेकी की

अधिकता कर, जब कि वे तेरे सम्मुख प्रलय के मैदान में सब के साथ उपस्थित किये जावें।

मुहम्मद साहेब की पवित्र सन्तान की शराफ़त तथा उनके गुण

हे वह प्रभु, जिसने मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान को मुख्य रूप से लहत्व-पूर्ण गुण दिये, उन को नबी बनाया, समस्त नबियों का सरदार बनाया और उनका वारिस बनाया, मुहम्मद साहेब पर रिसालत समाप्त की अर्थात् मुहम्मद साहेब के बाद किसी को रसूल और नबी नहीं बनाया और इनको अन्तिम रसूल बनाया और उनके नायब और जांनशीन इमाम बनाये, उनको सारे ज्ञान प्रदान किये, तू उन पर अपनी कृपा रख और साथ-साथ मुझे भी अपनी कृपा से ख़ाली न रख और अपनी दया की वर्षा कर।

(४)

अपने आप को सब से छोटा और निर्बल समझते हुये ईश्वर से प्रार्थना

अपनी ग़लतियों को स्वीकार करते हुये ईश्वर से प्रार्थना

हे प्रभु, मेरी ग़लतियों ने मुझे चुप कर दिया है, मेरी बोलने की क्षमता समाप्त हो चुकी है और अब मेरे पास कोई विधि नहीं है, मैं अपनी ही उत्पन्न की हुई आपत्ति में कैद हूँ और अपनी ग़लतियों में फँसा हूँ। मुझे

मेरी ग़लत भावनाओं ने ग़लती करने वालों के रास्ते पर खड़ा कर दिया है। उन कम-नसीबों की श्रेणी में ला कर खड़ा कर दिया है, जो तेरे मुक़ाबले का साहस करते हैं और तेरे वादे को झूठा समझते हैं।

हे प्रभु, तू पाक है, तू मालिक है, तेरा वादा सच्चा है, मैं अपनी असत्य भावनाओं को ठोकर मारता हूँ—तू मुझे क्षमा कर।

बेबसी की दशा में ईश्वर से प्रार्थना

हे प्रभु, मेरे मुँह के बल गिर जाने एवं पैरों के बल फिसल जाने पर तरस खा कर अपनी कृपा कर। अपनी असीम कृपा से मेरी ग़लतियों को क्षमा कर। मैं अपनी ग़लती स्वयं स्वीकार करता हूँ, मैं हाथ जोड़ता हूँ, अपना मस्तिष्क तेरे सम्मुख शर्म से झुकाता

हूँ, तू मेरी बुरी भावनाओं से बदला ले, मेरे बुढ़ापे पर तरस खा, मेरी मौत समीप होने और मेरी निर्बलता पर कृपा कर।

हे प्रभु, जिस प्रकार अगले लोगों को उन के मर जाने पर संसार ने भुला दिया और उनके निशान मिट गये उसी प्रकार इस संसार से मेरे उठ जाने के पश्चात् तू मुझ पर भी अपनी कृपा कर।

हे परमात्मा, तू मेरी ग़लतियों को क्षमा कर दे और प्रलय पर तू मेरा स्थान अपने भक्तों के साथ नियुक्त कर।

हे समस्त संसार के पालनहार, मेरे निवास का स्थान प्रलय पर अपने समीप रखने का प्रबन्ध करने की कृपा कर।

(५)

ईश्वर

से

कृपा और क्षमा

प्रार्थना

हार्दिक स्वच्छता एवं भावनाओं की उज्ज्वलता के प्रति ईश्वर से प्रार्थना

हे परमात्मा मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा की वर्षा कर और हर बुरी चीज़ों और बुरे कार्यों की ओर से मेरी इच्छाओं को पलट दे। हर प्रकार के ग़लत रास्तों और कार्यों से मेरी लालसा को रोक। मेरी भावनायें ऐसी बना दे कि मैं किसी भी मुसलमान और ईमानदार धर्मी नर या नारी की दुःखी न कर सकूँ।

हे प्रभु यदि किसी ने मुझसे ऐसी बात की हो जिससे तूने मना किया हो, मेरे भेदों को खोला हो, मुझे कष्ट दिया हो, मेरे साथ बुराई की हो चाहे जीवित हो या मर चुका हो उसको क्षमा कर दे और इस क्षमा करने की प्रार्थना के बदले तू मेरी समस्त ग़लतियों को क्षमा कर दे और मुझ पर अपनी कृपा कर।

किसी का हक़ और पद न देने की ग़लती को क्षमा कर देने की प्रार्थना

हे परमात्मा यदि मेरे कारण किसी को उसका हक़ न मिल सका हो तो तू मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा करने के साथ साथ मुझ पर भी कृपा करते हुये मुझे इस ग़लती के प्रति क्षमा कर दे क्योंकि यदि क्षमा प्रदान न की गई और दण्ड दिया गया तू फिर ऐसा है कि तूने मुझे मार ही डाला।

हे प्रभु मैं तुझसे ऐसी चीज़ माँगता हूँ जिसके देने से तुझे कोई हानि नहीं है, मैं अपने उन गुनाहों को तुझसे क्षमा कराना चाहता हूँ कि जो वास्तविक बोझ हैं मुझ पर, मैं क्षमा करने की यह सहायता इसलिये माँगता हूँ कि मैं अपने इन गुनाहों से बहुत ही दुःखी हूँ।

हे ईश्वर तू गुनाहों को क्षमा करने वाला है। तू बहुधा बुरे कार्य करने वालों को क्षरता है, मुझे भी क्षमा कर दे।

ईश्वर की कृपा चाहते हुये अपनी ग़लतियों के क्षमा कर दिये जाने की प्रार्थना

हे प्रभु मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा रखने के साथ साथ मुझे उन लोगों के पद चिह्नों पर चलने की समझ प्रदान कर।

हे परमात्मा तू मुझे उन लोगों के रास्ते पर चलने की बुद्धि दे जिनके गुनाह तेरी कृपा से क्षमा कर दिये गये हैं।

हे प्रभु, निसन्देह तू उनके गुनाहों को क्षमा कर देता है जो अपने किये हुए बुरे कार्यों पर पछता कर पुनः ऐसा न करने का प्रण करते हुये क्षमा चाहते हैं। वेशक जो तुझ से निराश नहीं होता तू उसकी आशाओं को पूरी करता है।

ईश्वर की असीम कृपा की वर्षा की आशा रखकर प्रार्थना

हे प्रभु तू ऐसा कृपा करने वाला है कि सच्चे लोगों का भी निरष्कार करता है और बुरे लोगों का भी वेड़ा पार लगाता है।

हे प्रमात्मा तू सबसे ऊँचा है और तेरी दी हुई सामग्रियाँ सारे संसार को लाभ पहुँचा रही हैं।

इसलिये सारी प्रशंसायें तेरे ही लिये हैं, मुझे क्षमा कर।

(६)

आवश्यकताओं

के

पूरा होने की

प्रार्थना

ईश्वर ही आवश्यकताओं का पूरा करने वाला है

हे प्रभु, हे आवश्यकताओं के पूरा कराने की सीमा, हे-वह जिससे माँगी हुई वस्तुयें मिलती हैं, हे वह जो अपनी चीज़ों को क़ीमतों पर नहीं बेचता, हे वही प्रभु जिसकी ओर सारा संसार झुकता है, हे वही ईश्वर जिसका

ख़ज़ाना कभी ख़ाली नहीं होता, हे वही परमात्मा जो ग़रीबों का पालनहार है, और हे वही प्रभु जिसको पुकारने वालों की पुकार से दुःख नहीं होता, तू समस्त आवश्यकता वालों पर अपनी कृपा कर।

सच्चे एवं वास्तविक मालदार ईश्वर से आवश्यकताओं के पूरा करने की प्रार्थना

हे प्रभु अभी तक मैं ग़लती पर था कि उन से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहता था जो वास्तव में तेरे ही सामने झुकते हैं। और तुझसे ही माँगते हैं। अब मैं समझा और तेरी ओर लौटा। मुझे क्षमा कर और जो माँगता हूँ मुझे दे। तेरे पास कोई कमी

नहीं है और न होगी। मैं तुझसे प्रथम माँगने वाला नहीं हूँ, न जाने कितने माँग चुके और तू दे चुका।

इसलिये प्रार्थना है कि हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा रखते हुये उन्हीं के द्वार की भीख समझ कर थोड़ी कृपा मुझ पर करके मेरे माँगने पर मुझे भी मेरी ग़लतियों को क्षमा करके दे।

हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान के द्वारा आवश्यकताओं के पूरा करने की प्रार्थना

हे प्रभु हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा और नेकी की वर्षा कर और उसी कृपा के साथ साथ मेरी भी

समस्त आवश्यकतायें पूरी कर और मेरी पुकार से समीप हो जा। मेरी दुर्बलता पर रहम कर। मेरी आवाज को सुन ले। मेरी आशा को न तोड़। अपने पुरस्कार सूची से मेरा नाम न काट। मुझे मेरी आवश्यकताओं के पूरी होने के निमित अपने अतिरिक्त किसी और के पास न जाने दे। मेरे कष्टों को शीघ्र ही दूर कर।

निसन्देह तू बड़ी कृपा करने वाला है, मेरी समस्त आवश्यकताओं को पूरी कर।

हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा रखते हुये मुझ पर भी कृपा कर।

(७)

दुःख

एवं

सोच हटने

की

प्रार्थना

ईश्वर ही दुःख और कष्ट को दूर करने वाला है

हे सोच के दूर करने वाले, दुःख के काटने वाले, संसार और प्रलय में कृपा करने वाले, कृपा निधान ईश्वर मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा रखने के पश्चात मेरे दुःखों और कष्टों को दूर कर।

अपनी कमज़ोरी और लाचारी का समर्थन

हे प्रभु, मैं अवश्य तुझसे उस मनुष्य की तरह प्रार्थना करता हूँ जिसके दुःख बहुत बढ़ गये हैं, जिसका बल समाप्त हो चुका है और जिसके गुनाह अधिक हो चुके हैं। मैं तेरे सम्मुख उस मनुष्य के समान गिड़ गिड़ाता हूं जिसे तेरे अतिरिक्त कोई और सहारा नहीं है और न तो तेरे सिवाय कोई दूसरा कष्टों को दूर करने वाला है।

हे प्रभु, मेरे कष्टों को शीघ्र ही काट दे।

ईश्वर की खुशी प्राप्त करने की प्रार्थना

हे क्रोध एवं कृपा वाले प्रभु! मैं तुझसे

अपने मन में ऐसी भावनाएँ उत्पन्न करने की प्रार्थना करता हूँ जिससे तू मुझे अपना मित्र समझने लगे। अपने पर ऐसा विश्वास दे जिससे मुझे लाभ हो।

हे प्रभु, मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा रख और उन्हीं के द्वारा मरते समय मुझे सच्चाई पर स्थिर रख, मेरी आवश्यकताओं को पूरा कर। मुझे अपने ऊपर पूरा पूरा भरोसा रखने में समर्थ कर।

सच्चे और अच्छे कार्य करने वालों के गुणों को अपनाने की भावना उत्पन्न होने की प्रार्थना

हे परमात्मा, मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी भावनायें अच्छे कार्यों की ओर लगा और मुझे बुरे कार्यों से बचा।

मैं तुझ से ऐसा भय माँगता हूँ जैसा कि तेरे सच्चे भक्त तुझ से डरते हैं।

मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी प्रार्थनाओं में सच्चाई पैदा हो।

मेरी प्रार्थना है कि तू मेरे दिल में अपने प्रति पूरा-पूरा भरोसा पैदा कर दे।

हे ईश्वर, तुझ से माँगने में मेरी ऐसी दशा हो, जैसे तेरे सच्चे भक्त माँगते हैं।

मुझे अपने से ऐसा डरने वाला बना, जैसा कि तुझ से तेरे सच्चे मानने वाले डरते हैं।

हे ईश्वर, तू मुझे ऐसा बना दे कि मैं किसी और के डर से तेरे सच्चे धर्म के रास्ते से हटने न पाऊँ।

(८)

कष्ट

एवं दुःख के समय

की

प्रार्थना

ईश्वर से सहायता चाहना

हे प्रभु, तू अवश्य मेरी भावनाओं से अधिक बल वाला है, तू जिस ओर चाहे, उसे फेर और पलट सकता है, इस लिये मेरे हृदय को ऐसा बना दे कि मैं ऐसे कार्य करूँ कि जिस से तेरी खुशी प्राप्त हो।

हे परमात्मा, मैं दुःखों एवं कष्टों का भार उठाने में असमर्थ हो चुका हूँ इसलिये मुझे शीघ्र ही रोज़ी दे। मुझे अपने बनाये हुये लोगों के सहारे पर न छोड़। क्योंकि वह भी मुझ ही जैसे हैं और तेरे ही सामने झुकते हैं। तू स्वयं मेरी आवश्यकताओं को पूरी कर। मेरी सहायता कर।

यदि तू मुझे मेरी ही भावनाओं के अधीन छोड़े रक्खेगा तो मैं दुखों में फँसा ही रहूँगा।

यदि तू मेरा सहारा मेरे रिश्तेदारों और कुटुम्ब वालों से लगा देगा तो वह मुझे बहुत कम देंगे और एहसान बहुत रक्खेंगे। इसलिये किसी का मोहताज न बना, स्वयं मेरी सहायता कर।

अच्छे कार्य करने के योग्य होने की प्रार्थना

हे प्रभु, हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा दृष्टि की छाया डालते हुये उनके द्वारा मुझे दूसरे की जलन करने से बचा, गुनाहों से दूर रख, जिन कार्यों से तू रोकता है उनसे दूर रहने की भावना मेरे दिल में उतपन्न कर। मेरी हिम्मत अपने आदेश के पालन में स्थिर रख।

मेरी रोज़ी, हिम्मत, अन्य दी हुई चीज़ों में बढ़ती कर। मेरे ईमान और धर्म को मज़बूत बना। मेरी सहायता कर।

ईश्वर और मनुष्यों के हक़ पूरा करने की प्रार्थना

हे ईश्वर, हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी

पवित्र सन्तान पर कृपा और नेकी की वर्षा करते हुये उनके सदके में जो कुछ तू मुझसे चाहता है करा ले। यदि किसी और का कोई हक़ मुझ पर देय है, तो उसके पूरा करने में तू मुझे समर्थ बना।

हे परमात्मा, ऐसा न हो कि इस संसार में मुझसे कोई ऐसा कार्य छूट जाये जिसके लिये तेरा आदेश हो और मुझे प्रलय पर दण्ड सहन करना पड़े।

ईश्वर की प्रार्थना करते समय प्रार्थना में मन लगने की प्रार्थना

हे परमात्मा, हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा और मेहरबानी की आँख रखते हुये उनके सदके में मेरे मन की भावनाओं को ऐसी बना दे कि मैं सदा

तेरी खुशी का कार्य करता रहूँ। मुझे मेरे मरने के बाद भी खुश रहने के कार्य करने की भावना दे। मुझे सच्चाई पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ दे।

संसार के लालच में फँसने से मुझे बचाये रख। मेरे मन में सारी बुराइयों से अलग रहने का डर उत्पन्न कर। मेरे मन में मेरे समस्त कार्यों को चमत्कार बनाने की उज्ज्वलता पैदा कर।

हे परमात्मा, हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर अपनी असीम कृपा की वर्षा करते हुये उनके ही द्वारा मुझे प्रलय के संकटों से बचा।

हे ईश्वर, मेरा संसार और मेरा अन्त ठीक रहने के प्रति अच्छे कार्य करने की भावनायें

मेरे दिल में उत्पन्न कर। मेरी आवश्यकताओं को पूरी कर।

ईश्वर की कृपाओं पर धन्यवाद दूसरे की जलन न करने और हर स्थिति में ईश्वर ही की कृपा और उसके आदेशों के पालन करने में दृढ़ रहने की प्रार्थना

हे प्रभु, हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा रख और मेरे अच्छे समय पर या ग़रीबी के समय पर या अस्वस्थता के समय पर जो कुछ भी तू ने मुझे दिया उसका धन्यवाद देने, उस पर खुश रहने, और उसको काफ़ी समझने की तू मुझे तौफ़ीक़ दे।

मेरी भावनायें ऐसी बना दे कि तेरी खुशी के कार्य भली भाँति पूर्ण रूप से कर सकूँ।

हे प्रभु, मेरी यह प्रार्थना है कि हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा दृष्टि रखते हुए उन्हीं के द्वारा दूसरों की जलन से मुझे बचा। यदि किसी को अधिक दौलत तूने दी है तो उसे देख कर मैं ईर्ष्या न करूँ।

हे ईश्वर, तू मेरी भावनायें ऐसी कर दे कि दूसरों के धन से मैं ईर्ष्या न कर सकूँ और तुझ ही से अपने लिये भी माँगू।

हे कृपा निधान, हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा एवं नेकी की दृष्टि रखते हुए उनके द्वारा मुझे ग़लतियों से बचा। मुझे इस संसार में और प्रलय पर गुनाहों से बचाना।

हे ईश्वर, तू मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरे क्रोध और तेरी खुशी में दी हुई वस्तुओं को बहुत समझूँ। हर हालत में तेरी प्रशंसा करता रहूँ। सदा तेरी ही प्रसन्नता की खोज में रहूँ।

हे ईश्वर, मुझे उन लोगों में गिने जाने के योग्य कर जो सुख और दुःख दोनों ही दशाओं में तेरी प्रशंसा करते रहते हैं।

निस्सन्देह तू ही सबसे उच्चतर है। मेरी सहायता कर।

(६)

रोज़ी

की

कमी को दूर करने के प्रति

प्रार्थना

ईश्वर के अतिरिक्त किसी और से रोज़ी माँगना अपने ईमान और धर्म की कमज़ोरी का प्रमाण है

हे प्रभु, रोज़ी की कमी के कारण मेरी भावनायें अवश्य ऐसी ख़राब हो गई हैं कि मैंने तुझे छोड़ कर दूसरों से माँगा और लालच किया कि दूसरों की तरह मैं भी अधिक दिन तक जीवित रहूँ।

ईश्वर के रोज़ी देने पर विश्वास करना चाहिये

इसलिये हे ईश्वर, हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा और नेकी की आँख रखते हुए उनके द्वारा मुझे अपने पर सच्चा विश्वास रखने की भावना प्रदान कर।

हे प्रभु, अपने वादे के अनुसार मुझे रोज़ी दे और कष्ट से बचा।

ईश्वर रोज़ी देने का ज़मानतदार है

हे ईश्वर, रोज़ी देने का तूने वादा किया है और क़सम खाई है। तेरा प्रण सत्य है और तेरी शपथ सच्ची है, मुझे रोज़ी पहुँचा और कष्टों से मुक्त कर।

(१०)

उधार चुकाने की प्रार्थना

उधार चुकाने में बिलम्ब होने से मन का उकताना

हे भगवान, हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा-ज्योति के साथ-साथ मेरा उधार चुका दे, जिससे मेरी इज्ज़त ख़राव हो रही है, मेरी उलझन वढ़ रही है।

इसलिये प्रार्थना है कि मेरा क़र्ज शीघ्र ही चुका दे।

क़र्ज की परेशानी से मुक्त होने की प्रार्थना

हे ईश्वर, हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर रहम और नेकी की किरणें चमकाते हुये मुझ पर भी कृपा कर और क़र्ज चुका दे। इस सम्बन्ध में मेरी रक्षा कर, जिससे संसार और प्रलय में मुझे शर्म न घेरे। मुझे इतनी रोज़ी दे कि मेरा उधार चुक जाये और क़र्ज बाकी रहने से मुझे शर्म का सामना न करना पड़े।

चादर के अनुसार पैर फैलाने और आय के अनुसार व्यय करने की आदत पड़ने की प्रार्थना

हे ईश्वर, हजरत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा कर और उनके सदके में मुझे व्यर्थ खर्च करने से बचा और औसत चाल पर रहने की आदत सिखा। मुझे सच्चे रास्तों से रोजी प्राप्त करने की विधि बता। मेरा पैसा अच्छे कार्यों में लगने का रास्ता बता। मुझे घमण्ड हो जानेवाली रोजी से बचाये रख। मुझे इतनी रोजी भी न दे कि मैं अपनी सीमा से बढ़ जाऊँ।

ईश्वर का भक्त बनने, स्वच्छ और सच्चा रहने एवं ईश्वर की ओर से मिली हुई रोजी और चीजों पर शुक्र करने की भावना उत्पन्न होने की प्रार्थना

हे प्रभु, मुझे भक्तों के साथ रहने में मेरी सहायता कर। मिट जानेवाले संसार में जो कुछ मुझे दिया है, उसको ऐसे कामों में खर्च करने की भावना दे, जो स्वर्ग में ले जाने का कारण बने। हे ईश्वर, वास्तव में तू बड़ा कृपानिधान है।

(११)

माँ-बाप

के

लिये

प्रार्थना

माँ-बाप का हक़ पहचानने का

प्रश्न

हे प्रभु, अपने पाक रसूल हजरत मुहम्मद

साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर अपनी कृपा की वर्षा के साथ-साथ उनपर अपने स्वच्छ पुरस्कारों का वितरण कर। उनके द्वारा मेरे मन में माँ-बाप की सेवाओं की भावना मजबूत कर। मुझे उन समस्त बातों का ज्ञान दे, जिनसे माता-पिता की सेवाओं में सहायता मिले। जो बात मेरे मन में बैठ जाये, उसको पूरा करने में मुझे समर्थ कर। मेरे हाथ-पैर माता-पिता की सेवाओं से न हटने पावें।

माता-पिता का कहना मानने की आदत होने की प्रार्थना

हे भगवान, हज़रत मुहम्मद साहेब एवं उनकी पवित्र सन्तान पर अपनी मेहरबानी

रख और जिस प्रकार उनके द्वारा तूने हमें बढ़ाया है, उसी प्रकार उनपर और भी अधिक रहम कर।

हे प्रभु, मुझे ऐसा बना दे कि मैं माँ-बाप से ऐसा डरूँ जैसे जालिम बादशाह से डरते हैं। मुझे ऐसा बना दे कि माँ-बाप की सेवा करने से मुझे ऐसी ठण्डक हो, जैसे निद्रा से मनुष्य को विश्राम प्राप्त होता है।

मुझे ऐसा बना कि माँ-बाप की सेवा करने से मुझे अत्यन्त हर्ष हो। जिस प्रकार पानी पीकर प्यासा आराम पाता है, उसी प्रकार माता-पिता की सेवा से मुझे आराम मिले। मैं जो भी नेकी उनके साथ करूँ, चाहे कितनी ही अधिक क्यों न हो, मैं उसे कम

समझूँ। हे प्रभु, मेरी आवाज उनके सामने हलकी रहे। मेरी बातचीत उनके सामने पाक और सीधी हो। मैं उनके साथ नेकी करूँ। मेरे मन को उन पर शीलवान बना। मुझे उन पर मेहरवानी करनेवाला बना।

माँ-बाप ने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया और हर प्रकार का ज्ञान सिखाया, उसके बदले में उनपर कृपा करने की ईश्वर से प्रार्थना

हे भगवान, हमारे माँ-बाप को हमारे साथ संसार में भलाई करने के बदले में अपनी कृपा के अन्दर रख और हमारी हर प्रकार से रक्षा करने के बदले में उन पर शीलता की

वर्षा कर और जैसे बालपन में उन्होंने हमारी रक्षा की है, उसी प्रकार उनकी भी रक्षा कर।

हे भगवान, मेरे माँ-बाप को जितना भी मेरे कारण कष्ट पहुँचा हो और उनका हक़ मारा गया हो एवं मेरी कोई बात उनको अप्रिय लगी हो, उतना ही उनके गुनाहों को क्षमा कर।

औलाद कभी माँ-बाप के हक और एहसान से उत्तीर्ण नहीं हो सकती

हे प्रभु, यदि मेरे माँ-बाप ने कभी मुझ पर सख्ती की हो या मेरे किसी हक़ को न दिया हो और मेरी किसी आवश्यकता को

पूरी न किया हो तो मैं उसका कोई ध्यान नहीं रखता, उसके प्रति मेरे मन में कोई मैल नहीं है, उसके बदले में उनको कोई दण्ड न देना, क्योंकि यदि कभी ऐसा किया भी है तो इससे कहीं अधिक नेकी भी कर चुके हैं। मैं उनसे कोई भी बदला नहीं ले सकता। उनके बड़े-बड़े एहसान मुझ पर हैं।

हे भगवान, मेरे माँ-बाप ने मेरे पालन-पोषण में बहुत कष्ट उठाये हैं, मैं कभी बदला नहीं चुका सकता। उनकी किसी प्रकार की कभी की लापरवाही को, जो यदि मेरे प्रति हुई हो, क्षमा कर।

माता-पिता की मुक्ति की प्रार्थना

हे भगवान, हज़रत मुहम्मद साहेब और उनकी पवित्र सन्तान पर कृपा-दृष्टि रख और

उनके सदके में मेरी सहायता कर। तुझे छोड़ कर इस संसार में और कौन है जिस से कि सहायता माँगी जाती है। तू उन सब से बलवान है और बहुत अधिक शीलवान है। मेरी हर प्रकार की सहायता कर, मैं किसी और से कुछ नहीं माँगना चाहता। हे प्रभु, मुझे माँ-बाप की सेवा करने में समर्थ कर।

हे भगवान, मुझे माँ-बाप की सेवा करने में सच्चा और दृढ़ बना।

हे भगवान, नमाज़ के समय के अतिरिक्त हर समय माँ-बाप की सेवा की भावना उत्पन्न कर।

हे ईश्वर, माँ-बाप के लिये मुक्ति की प्रार्थना करने के बदले में खुश होकर मेरे गुनाहों को क्षमा कर।

हे प्रभु, यदि मेरी प्रार्थना के पूर्व ही मेरे माता-पिता को क्षमा कर चुका है तो उनकी सिफ़ारिश से मेरे गुनाहों को क्षमा कर।

हे प्रभु, तू निस्सन्देह सब से बढ़ कर शीलवान है, मुझ पर कृपा कर और मेरे माता-पिता के गुनाहों को क्षमा कर।